सार्क: क्या हासिल किया अब तक?

(SAARC: Achievements Since Inception)

📝 डॉ. राजेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा
(वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा)

🔰 सार्क क्या है?

सोचिए कि सात-आठ पड़ोसी देश एक साथ मिलकर यह तय करें कि—
"हम आपस में लड़ेंगे नहीं, बल्कि मिलकर गरीबी, बीमारी और बेरोज़गारी से लड़ेंगे।"

बस यही सोच लेकर सार्क (SAARC) बना था।

पूरा नाम: South Asian Association for Regional Cooperation

शुरुआत: 8 दिसंबर 1985, ढाका (बांग्लादेश)

मुख्यालय: काठमांडू, नेपाल

सदस्य देश: भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, मालदीव और अफगानिस्तान

🏆 अब तक की प्रमुख उपलब्धियाँ

1️⃣ एक-दूसरे के साथ व्यापार को बढ़ावा

1995 में SAPTA नाम से व्यापार समझौता हुआ

2006 से SAFTA के तहत कोशिश हुई कि देशों के बीच सामान आसानी से बिक सके
👉 यह सोच थी: “चीन से नहीं, पहले आपस में व्यापार करें।”

2️⃣ गरीबी हटाओ – साथ चलो

1993 में एक खास योजना शुरू हुई कि सभी देश अपने अनुभव बाँटें – किस देश ने गरीबी कैसे कम की?

कई छोटी परियोजनाएँ शुरू हुईं जैसे – सस्ते लोन, महिला उद्यमिता, प्रशिक्षण केंद्र।

3️⃣बीमारियों से लड़ने में साथ-साथ

नेपाल में SAARC TB और HIV/AIDS सेंटर बनाया गया

कोरोना (COVID-19) के समय 2020 में भारत ने सबसे पहले $10 मिलियन देकर आपातकालीन फंड शुरू किया

4️⃣युवा और शिक्षा को साथ जोड़ना

छात्रवृत्तियाँ, रिसर्च प्रोजेक्ट और स्कॉलर एक्सचेंज के जरिए एक-दूसरे की शिक्षा प्रणाली को समझने का मौका मिला

SAARC यूनिवर्सिटी (नई दिल्ली) जैसे प्रयास हुए

5️⃣आपदाओं से निपटने की तैयारी

भूकंप, बाढ़, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं के लिए SAARC Disaster Management Centre बना

अनुभवों को साझा करने और प्रशिक्षण देने का प्रयास

6️⃣पर्यावरण की चिंता

जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों की सुरक्षा, जंगल और पानी के संरक्षण के लिए घोषणाएँ हुईं

'हरित दक्षिण एशिया' की भावना को बढ़ावा

7️⃣महिलाओं और बच्चों की स्थिति बेहतर करने के प्रयास

महिलाओं के लिए डिजिटल डाटा प्लेटफ़ॉर्म

लड़कियों की शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर संयुक्त योजना

8️⃣सांस्कृतिक मेल-जोल

SAARC साहित्य महोत्सव, फिल्म फेस्टिवल, संगीत व नृत्य आयोजनों के ज़रिए दिलों को जोड़ा गया

😟 कुछ परेशानियाँ भी रहीं

भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव ने कई बार सार्क शिखर सम्मेलन को टाल दिया

फैसले लेने में सर्वसम्मति की बाध्यता, यानी सभी को हाँ बोलना जरूरी, जिससे काम धीरे चलता है

छोटे और बड़े देशों के बीच आर्थिक असमानता

🌟 फिर भी सार्क क्यों जरूरी है?

सार्क ने दिखाया कि हमसफर बनकर समस्याओं को हल किया जा सकता है।
भले ही रफ्तार धीमी रही, पर दिशा सही रही।

> ❝ अगर राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो SAARC भविष्य में एशिया का EU (European Union) बन सकता है। ❞

📚 अंत में...

सार्क एक सपना है – साझा विकास और सहयोग का सपना।
इसने अब तक कई बीज बोए हैं—अब ज़रूरत है उन्हें मिलकर सींचने की।

📖 यह ई-नोट्स इतिहास विभाग, महाराजा कॉलेज, आरा के छात्रों के अध्ययन के लिए तैयार किया गया है।

✍️
डॉ. राजेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग, महाराजा कॉलेज, आरा
(वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा)